प्राकृतिक वनस्पति

प्राकृतिक वनस्पति और वन पर्यावरण और पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वन स्थानीय मौसम की स्थिति में सुधार करते हैं, मिट्टी के कटाव को रोकते हैं, नदी के प्रवाह को नियंत्रित करते हैं और विभिन्न उद्योगों के लिए कच्चा माल प्रदान करते हैं। वन कई समुदायों को आजीविका प्रदान करते हैं और मनोरंजन के अवसर प्रदान करते हैं। वन तूफानों के वेग को कम करते हैं। वन औद्योगिक लकड़ी, निर्माण सामग्री के लिए लकड़ी, ईंधन की लकड़ी, चारा और कई उपयोगी और मूल्यवान उत्पाद प्रदान करते हैं। वन वन्य जीवन के लिए प्राकृतिक वातावरण प्रदान करते हैं।

वनों का वितरण: राजस्थान में वनावरण भारत के अन्य राज्यों की तुलना में अपनी भौतिक और जलवायु परिस्थितियों के कारण बहुत पतला है। राजस्थान में वनों के भौगोलिक वितरण में काफी भिन्नताएँ हैं - राजस्थान में घने वन आवरण मुख्य रूप से सिरोही, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, झालावाड़, कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर और अलवर जिलों में केंद्रित हैं। इन जिलों का 20% से अधिक क्षेत्र वनाच्छादित है। चुरू, नागौर, जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर आदि के शुष्क और रेगिस्तानी जिलों में उनके क्षेत्र का 2 प्रतिशत से भी कम वन आच्छादित है। सिरोही में अधिकतम वन आच्छादन (31%) और न्यूनतम चुरू (0.05%) में है, और जैसलमेर वनस्पति से रहित है। जैसलमेर में केवल कंटीली झाड़ियाँ और सेवन घास पाई जाती है। इंदिरा गांधी नहर से पानी मिलने से अब यहां हरियाली बढ़ रही है।

राजस्थान में वनों के प्रकार –

1. उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन - ये वन पश्चिमी शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में विशेष रूप से जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, बीकानेर, चुरू, नागौर, सीकर, झुंझुनू आदि जिलों में पाए जाते हैं। इन वनों में वृक्ष प्रमुखता से बौने हैं। रुकी हुई झाड़ियों से। इन जंगलों में खेजरी, रोहिड़ा, बेर, केर, थोर के पेड़ आदि और कुछ झाड़ियाँ उगती हैं। इनकी जड़ें लंबी और पत्तियां कांटेदार होती हैं। रेगिस्तान में इसकी जबरदस्त उपयोगिता के कारण खेजड़ी को रेगिस्तान के कल्प वृक्ष के रूप में जाना जाता है।

इन जंगलों में कई झाड़ियाँ भी पाई जाती हैं। झाग, अकरा, केर, लाना, अर्ना और झारबर इस क्षेत्र की मुख्य झाड़ियाँ हैं। इसके अलावा, इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की घास भी पाई जाती है। इनमें सेवन और धामन घास बहुत प्रसिद्ध हैं। धामन घास दुधारू पशुओं के लिए बहुत ही पौष्टिक और उपयोगी होती है जबकि सेवन घास सभी जानवरों के लिए पोषक होती है।

2. उष्ण कटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन - ये वन राजस्थान में एक विशाल क्षेत्र को कवर करते

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

हैं। ये 50 से 100 सेंटीमीटर वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

इन वनों में निम्नलिखित प्रकार के पेड़ पाए जाते हैं -

i) **शुष्क सागवान वन -** ये वन समुद्रतल से 250 से 450 मीटर की ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। सागवान के पेड़ों की प्रचुरता के कारण इन वनों का नाम पड़ा है। ये वन उदयपुर, डूंगरपुर, झालावाड़, चित्तौड़गढ़ और बारां जिले में पाए जाते हैं। कुल वनों में सागौन के वृक्षों की हिस्सेदारी 50 से 75 प्रतिशत के बीच है। इसके अलावा, इन वनों में तेंदू, धवरा, गुर्जन, गोदल, सिरिस, हल्दू, खेर, सेमल, रीठा, बहेड़ा और इमली के पेड़ भी पाए जाते हैं। सागौन के पेड़ भीषण ठंड या पाला सहन नहीं कर सकते, इसलिए इनकी सघनता राजस्थान के दक्षिणी क्षेत्रों में है। सागौन की लकड़ी कृषि उपकरण और निर्माण सामग्री बनाने के लिए बहुत उपयोगी है।

ii) **सालार वन** – ये वन 450 मीटर से अधिक ऊँचाई वाली पहाड़ियों में पाए जाते हैं। ये वन उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, सिरोही, पाली, अजमेर, जयपुर, अलवर और सीकर जिलों में प्रचलित हैं। इन वनों के प्रमुख वृक्ष सालार, ढोक, कथिरा और धवर हैं। सालार का पेड़ गोंद का अच्छा स्रोत है। इसकी लकड़ी पैकिंग के काम आती है। सालार वृक्षों के प्रभुत्व ने इसे सालार वनों का नाम दिया है।

iii) **बाँस के वन -** बाँस के वृक्षों की प्रचुरता के कारण इन वनों को बाँस के वनों के रूप में जाना जाता है। ये वन राजस्थान में प्रचुर वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ये वन बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, बारां, कोटा और सिरोही जिलों में प्रचलित हैं। बांस के पेड़ों की बहुतायत से बांसवाड़ा ने अपना नाम कमाया है। इन जंगलों में धवरा, सागौन, ढोकरा आदि भी पाए जाते हैं।

iv) **ढोकरा वन -** ढोकरा वन राजस्थान के एक बहुत बड़े क्षेत्र में पाए जाते हैं। मरुस्थल को छोड़कर राजस्थान के सभी क्षेत्रों का भौगोलिक वातावरण ढोकरा वृक्षों के लिए अनुकूल है। इसलिए, यह राज्य में बड़े पैमाने पर पाया जाता है। ये राजस्थान में 240 से 760 मीटर की ऊंचाई पर अधिक प्रमुख हैं। ये कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, जयपुर, अलवर, अजमेर, उदयपुर, राजसमंद और चित्तौड़गढ़ जिलों में अधिक प्रचलित हैं। ढोकरा को राजस्थान में ढोक के नाम से भी जाना जाता है। ये वन राज्य की प्रमुख वन संपदा में शामिल हैं.

v) **पलाश वन -** ये वन कठोर और चट्टानी सतह पर पाए जाते हैं। ये पेड़ पहाड़ियों से घिरी पठारी सतहों पर अधिक प्रमुख हैं। ये वन पथरीले मैदानों और उन क्षेत्रों में भी प्रचलित हैं जहाँ मिट्टी कठोर होती है। पलाश के साथी झारबर, कांकेरी, हिंगोटा, हरजन और अरुणज पेड़ हैं। ये वन अलवर, अजमेर, पाली, सिरोही, उदयपुर, राजसमंद और चित्तौड़गढ़ जिलों में पाए जाते हैं।.

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

C. **उप-उष्णकटिबंधीय पर्वतीय वन -** ये वन केवल माउंट आबू क्षेत्र में पाए जाते हैं। इनमें सदाबहार और अर्ध-सदाबहार वनस्पति शामिल हैं। घने वनस्पति के कारण साल भर हरियाली बनी रहती है। इन जंगलों में आम, बांस, नीम, सागौन के पेड़ आदि पाए जाते हैं। ये वन राजस्थान के कुल वन क्षेत्र के 0.5% से भी कम में पाए जाते हैं।

वनों का प्रशासनिक वर्गीकरण - राजस्थान के वन संसाधनों को प्रशासनिक व्यवस्था के आधार पर तीन भागों में बाँटा गया है।

1. **आरक्षित वन -** ये राज्य के स्वामित्व वाले वन हैं जिनमें पेड़ों को काटना और चराना प्रतिबंधित है। ये वन राज्य के कुल वन क्षेत्र का 38 प्रतिशत है।

2. **संरक्षित वन -** ये वन भी सरकारी नियंत्रण में हैं। अनुमति से वृक्षों की कटाई एवं चराई की जा सकती है। ये वन राज्य के कुल वन क्षेत्र के 51 प्रतिशत भाग पर पाए जाते हैं।

3. **अवर्गीकृत वन -** इन वनों में पेड़ों की कटाई और चराई पर कोई सरकारी नियंत्रण नहीं है। राज्य का शेष 11 प्रतिशत वन क्षेत्र इसी श्रेणी में आता है।

Gradeup

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now